दोहरा अभिशाप में अभिव्यक्त जाति दंश और शाप

ललिता महतो
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

यह प्रसिद्ध लेखिका कौशल्या बैसन्त्री जी की आत्मकथा है। जो परमेश्वरी प्रकाशन, प्रीत विहार, दिल्ली से 2009 ई. में प्रकाशित हुई। कौशल्या बैसन्त्री जी एक दलित लेखिका है। इन्होंने दलित स्त्री आत्मकथा की शुरुआत की। कौशल्या बैसन्त्री जी का जन्म एक दलित परिवार में 8 सितम्बर 1926 ई. में हुआ था। परिवार में कुल मिलाकर छः भाई बहन थे। पांच बहनें एक भाई था। कौशल्या जी भाई बहनों में दूसरे नम्बर पर थी। कौशल्या जी का जन्म जब हुआ था, उस समय दलित समाज छुआ–छूत, गरीबी, अशिक्षा, अन्धविश्वास, धार्मिक षडयंत्र आदि का बुरी तरह से शिकार था। जिसका वर्णन लेखिका ने अपनी आत्मकथा में किया है। कौशल्या बैसन्त्री जी का दलित स्त्री होना और उससे उपजा अनुभव उन्हें शेष लेखिकाओं से अलग करती है। उन्होंने अपनी आत्मकथा में अपने माता–पिता के कठिन जीवन का वर्णन किया है जो अपने बच्चों के प्रति प्रेम, त्याग का मिशाल है। कौशल्या जी कहती हैं कि "माँ बापू हमें पढ़ाने के लिए कड़ी मेहनत करते थे, माँ मील में काम करती थी समय बचता था तो बड़े (सवर्ण) घरों में चूड़ियाँ कुमकुम बेचती थी, उच्च जातियों की स्त्रियाँ दूर से ही चूड़ियाँ, कुमकुम खरीदती थी। यह सब माँ के लिए रोज का काम था इसलिए माँ को छुआछूत की आदत सी पड़ गयी थी।"[1]

बच्चों को पढ़ाने के लिए माता–पिता का संघर्ष और इस चेतना के पीछे डॉ० अम्बेडकर के भाषण का प्रभाव उल्लेखनीय है। सारे दलितों की तरह लेखिका भी विद्यालय में जाति से उपजे भेदभाव को भोगा है, जो इस आत्मकथा में स्पष्ट रूप से झलकता है। कौशल्या जी कहती हैं कि "स्कूल में हम अस्पृश्य बच्चे जमीन पर बैठते थे साथ में पढ़ने वाले (सवर्ण) बच्चे हम से दूर–दूर रहते थे। ऐसे समय में अपनी निर्बलता और बेबसी का अनुभव होता था।"[2]

लेखिका का बचपन दुःख, कष्टों और गरीबी में बीता था उनके माता–पिता अनपढ़ थे, लेकिन बच्चों को शिक्षा दिलाने के लिए हमेशा तत्पर रहते थे, क्योंकि वह नहीं चाहते थे कि उनके बच्चे भी उन्हीं की तरह मेहनत मजदूरी करें। गरीबी की मार खाते हुए उन्होंने जो अपने बच्चों के प्रति त्याग किया, उसका फल मीठा हुआ आज वे ही बच्चे अच्छे पदों पर हैं। कौशल्या जी ने भी पढ़ाई की लेकिन विवाह होने के कारण बी.ए. तक ही पढ़ाई हो

सकी, जिसका लेखिका को बहुत दुःख है। कौशल्या जी कहती हैं कि "मैं लेखिका नहीं हूँ, न साहित्यिकार लेकिन अस्पृश्य समाज में पैदा होने से जातियता के नाम पर जो मानसिक यातनाएं सहन करनी पड़ी, इसका मेरे संवेदनशील मन पर असर पड़ा। मैंने अपने अनुभव खुले मन से लिखे हैं। पुरुष प्रधान समाज औरतों का खुलापन बरदाशत नहीं करता। पति तो इस ताक में रहता है कि पत्नी पर अपने पक्ष को उजागर करने के लिए चरित्र हीनता का ठप्पा लगा दो।"[3]

विवाह के बाद लेखिका को पति का प्यार कभी नसीब नहीं हुआ था, लेखिका एक अभिशाप से निकलर दूसरे अभिशाप में पहुँच जाती है। लेखिका ने पति से मिली प्रताड़ना को जाति से परे सार्वभौमिक रूप से स्त्रियों के हिस्से आती व्यथा का वर्णन किया है। वह उन स्त्रियों का वर्णन भी अपनी आत्मकथा में करती है जिन्हें उनके खुद के प्रति के बदचलन का नाम देकर मुँह काला कर के गाँव में घुमाते हैं और अन्त में वह कुएँ में कूद कर जान दे देती है। समाज में जो स्त्रियों के प्रति घटनायें घटती हैं उसका सच्चा वर्णन लेखिका की आत्मकथा में मिलता है। लेखिका स्वयं एक दलित स्त्री है वह एक दलित और स्त्री के दर्द को समझती है क्योंकि वह स्वयं उन रास्तों से होकर गुजरती है। जो एक दलित स्त्री के लिए कठिन संघर्षों का द्वार है जिसे सवर्ण जाति और पति दोनों के अत्याचारों का शिकार होना पड़ता है।

लेखिका ने समाज में जो झेला, समझा उसे ज्यों का त्यों अपने आत्मकथा में रख दिया। लेखिका स्वयं कहती हे कि "मेरे शिक्षित पति लेखक और भारत सरकार में उच्च पद पर सेवारत रहे। उन्हें तामपत्र भी मिला है और स्वतंत्रता सेनानी का पेंशन भी, पति ने मेरी कभी कदर नहीं की बल्कि रोज–रोज झगड़े, गालियों से मुझे मजबूरन घर छोड़ना पड़ा और कोर्ट केस करना पड़ा। उस घर में चालीस बरस रही हूँ। घर छोड़ने के बिखरे दिनों मेरी लड़की सुजाता ने मुझे सहारा दिया। बेटी के घर रहते ही मुझे लिखने की सुविधाएं और नैतिक बल मिला।"[4]

लेखिका ने अपने आत्मकथा के माध्यम से अपने पढ़े–लिखे पति के बुरी सोच को समाज के सामने उजागर किया है। जो पत्नी को केवल बच्चे पैदा करने वाली मशीन और घर का काम करने वाली नौकरानी समझता है। ऐसे लोगों की मानसिकता को बदलने के उद्देश्य से लेखिका ने अपनी आत्मकथा लिखी और उन परिस्थितियों को भी प्रस्तुत किया जो एक दलित स्त्री के लिए कठिन चुनौती के सिवा कुछ नहीं होता है। एक दलित स्त्री

का जीवन कठिन संघर्षों से भरा रहता है। उसे समाज की दोहरे मार खानी पड़ती है, एक उच्च जातियों (भेदभाव) की ओर दूसरी पुरुषसत्ता की।

लेखिका ने अपनी आत्मकथा में अपने बीते हुए कल को बड़े सहास के साथ वर्णन किया है। जो एक स्त्री के लिए बड़ा कठिन काम होता है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि लेखिका बचपन में भेदभाव की शिकार होती है जो समाज में एक सवर्ण जाति के लोग दलित जाति के साथ करते रहते हैं। यहां तक वे उनकी स्त्रियों को अपमान करने से पीछे नहीं हटते हैं, इसका वर्णन लेखिका ने अपनी आत्मकथा में निडर होकर किया है। लेखिका ने अस्पृश्य समाज में जन्म लिया और गरीबी को झेला, समझा उससे सम्बन्धित अनेक बातों को अपनी आत्मकथा में सच्चे मन से लिखा। वह अपने पति के अत्याचार से दुःखी होकर तलाक ले लेती है। जो हर स्त्री के बस की बात नहीं है। इसमें भी हिम्मत की आवश्यकता होती है।

लेखिका की आत्मकथा "दोहरा अभिशाप"[5] एक श्रेष्ठ आत्मकथा है जो कमजोर दलित स्त्रियों को साहसी बनाती है।

संदर्भ

1. दोहरा अभिशाप – कौशल्या बैसन्त्री, परमेश्वरी प्रकाशन, प्रीत विहार दिल्ली, 2009, पृ. सं. 63
2. दोहरा अभिशाप – कौशल्या बैसन्त्री, परमेश्वरी प्रकाशन, प्रीत विहार दिल्ली, 2009, पृ. सं. 08
3. दोहरा अभिशाप – कौशल्या बैसन्त्री, परमेश्वरी प्रकाशन, प्रीत विहार दिल्ली, 2009, पृ. सं. 55
4. दोहरा अभिशाप – कौशल्या बैसन्त्री, परमेश्वरी प्रकाशन, प्रीत विहार दिल्ली, 2009, पृ. सं. 07
5. दोहरा अभिशाप – कौशल्या बैसन्त्री, परमेश्वरी प्रकाशन, प्रीत विहार दिल्ली, 2009